

## मृदा अपरदन से वर्ष 1990-2016 के दौरान भारत की एक तह्राई तट रेखा का वनशा

### चर्चा में क्यों?

नेशनल सेंटर फॉर कोस्टल रसिर्च द्वारा जारी एक रपिर्ट में कहा गया है कवर्ष 1990 से 2016 के बीच मट्टी के कटाव के कारण भारत की 6,632 कलामीटर की लंबी तटरेखा का लगभग एक-तह्राई हसिंसा नषट हो चुका है ।

### परमुख बढि

- पृथ्वी वजिज्ञान मंत्री ने भी हाल ही में संसद को बताया था कपश्चिमी तट (काफी हद तक स्थरि रहा) की तुलना में पछिले तीन दशकों में बंगाल की खाड़ी से लगातार चक्रवाती गतविधियों के कारण पूर्वी तट में अधकि कटाव हुआ है
- रपिर्ट के अनुसार, पश्चिमी बंगाल (63%) और पुदुचेरी मृदा क्षरण के प्रतति अधकि संवेदनशील हैं, इसके बाद केरल और तमलिनाडु में मृदा क्षरण क्रमशः 45% और 41% रहा ।
- उल्लेखनीय है कपूरवी तट पर ओडशा एकमात्र ऐसा राज्य है जहाँ तटीय मृदा क्षरण में 50% से अधकि की वृद्धि हुई है ।
- दरअसल, तटीय कटाव आबादी के लयि एक खतरा बन गया है और यदहिम तत्काल कदम नहीं उठाते हैं, तो समुद्र के साथ अधकिांश भूमि और बुनयादी ढाँचे को खो देंगे, साथ ही इस प्रकार का नुकसान अपूरणीय होगा ।
- पृथ्वी वजिज्ञान मंत्रालय द्वारा जारी रपिर्ट में कहा गया है कभारत की मुख्य भूमि जो समुद्र से संलग्न है, का लगभग 234.25 वर्ग कमी. क्षेत्र वर्ष 1990-2016 के दौरान नषट हो गया है । जलवायु परिवर्तन और बढ़ते समुद्री जलस्तर ने इस समस्या को और बढ़ा दिया है ।
- रपिर्ट में कहा गया है कइस तरह के वशिलेषण से तूफान और सुनामी जैसे तटीय खतरों का सामना करने के लयि की जाने वाली तैयारी में सुधार करने में मदद मलिंगी ।
- तटरेखाओं में बदलाव तटीय आधारभूत संरचना के लयि खतरा तो है ही साथ ही, यह आशंका है कअर्थव्यवस्था को नुकसान पहुँचाने सहति मछली पकड़ने के उद्योग को भी प्रभावति कर सकता है ।
- यह वशिलेषण एनसीसीआर के शोधकर्ताओं द्वारा नौ राज्यों और दो केंद्र शासति प्रदेशों के साथ संलग्न 6,632 कलामीटर लंबी तटरेखा का उपग्रहीय मानचित्रण तैयार कर कया गया है ।